आमंत्रण

07 से 16 सितंबर 2024

चक्रधर समारोह

39वाँ चक्रधर समारोह 2024

सुर-ताल, छंद और घुँघरु के 39 बरस .....

चक्रधर समारोह

निरंतर गतिमान सर्वकालिक उत्सव

राजा चक्रधर सिंह के कला-स्वप्न का इन्द्रधनुषी रूपांकन है चक्रधर समारोह। दरअसल हमारे अपने जीवन के रंगमंच पर, धरती - आकाश के रंगमंच पर ऐसा समारोह निरंतर सम्पन्न होता रहता है। चक्रधर समारोह के उल्लास के घुंघरू, आनंद की रागिनी और खुशियों की रौशनी भरे समूह-वाद्य निरंतर बजते रहते हैं.. कुछ कुछ कबीर साहब के अनहद नाद की मानिन्द।

जब कभी जिन्दगी ऐसे ही गुनगुनाती है- जब पंछी गीत गाते हैं, सिंदूरी किरणों की सुनहली पायल छनकाती जब धीरे धीरे भोर उतरती है तो पूरी कायनात में जैसे एक चक्रधर समारोह आयोजित हो जाता है। काले कजरारे बादलों के अपने बड़े से जूड़े में चाँद खोसे जब धीरे धीरे रात मुस्कुराती है तो पूरा आसमान चक्रधर समारोह जैसे उत्सव के आनंद से विभोर हो उठता है।

यह चक्रधर समारोह ही है जो हमारी खुशियों को उस्ताद बिस्मिल्ला खाँ की शहनाई में सजा देता है। हमारी गीली गीली हँसी और सिली सिली पीड़ा को पं. हरिप्रसाद चौरसिया की बाँसुरी में ढाल देता है। यही चक्रधर समारोह, उस विराट की प्रार्थना के लिये, हमारे कंठ में गायन-ऋषि पं. जसराज जी के दिव्य सुर भर जाता है। बुद्ध से लेकर ओशो तक, अंतस के इसी संगीत और भीतरी सुरताल की चर्चा करते आये हैं। आनंद तत्व के रूप में यही शाश्वत संगीत, चक्रधर समारोह में हमेशा स्पंदित होता रहता है। दरअसल चक्रधर समारोह एक सर्वकालिक एवं निरंतर गतिमान उत्सव है।

महाराजा चक्रधर सिंह

जन्म : 19 अगस्त 1905 • विलय : 07 अक्टूबर 1947

छत्तीसगढ़ शासन, संस्कृति विभाग, पर्यटन मंडल एवं जन सहयोग से जिला प्रशासन का प्रतिष्ठापूर्ण आयोजन

पद्मश्री देवयानी
भरतनाट्यम

सुश्री पौशाली चटर्जी
मणिपुरी नृत्य

श्री राकेश चौरसिया
बाँसुरी वादन

डॉ. कुमार विश्वास
कवि एवं वक्ता

पद्मश्री हेमा मालिनी
भरतनाट्यम

पद्मश्री रामलाल जी
कथक

पद्मश्री अनुज शर्मा
लोक गायन

सुश्री मीनाक्षी शेषाद्रि
भरतनाट्यम

डॉ जी. रथीस बाबू
भरतनाट्यम, कुचिपुड़ी

श्री जीतू शंकर
फ्यूज़न : तबला वादन

पद्मश्री रंजना गौहर
ओडिसी नृत्य

डॉ. रघुपतरूनी श्रीकांत
कुचिपुड़ी नृत्य

मो. चाँद अफ़ज़ल कादरी
कव्वाली

सुश्री मृदुस्मिता दास
असमिया सत्रीया नृय

सुश्री ए. मंदाकिनी स्वैन
शास्त्रीय गायन

श्री सौगत गांगुली
सरोद वादन

श्री विनोद मिश्रा
शास्त्रीय गायन

पद्मश्री डॉ. भारती बंधु
गायन : सूफी व कबीर

सुश्री आर्या नंदे
ओडिसी

श्रीमती बासंती वैष्णव
कथक : रायगढ़ घराना

श्री राकेश शर्मा
गायन

सुश्री माया कुलश्रेष्ठ
कथक

श्री गजेन्द्र पण्डा
ओडिसी

श्री राहुल शर्मा
संतूर वादन

सुश्री विद्या प्रदीप
मोहिनीअट्टम

सुश्री कृष्णभद्रा नम्बूदरी
भरतनाट्यम

सुश्री ज्योतिश्री बोहिदार
कथक : रायगढ़ घराना

आमंत्रण

चक्रधर समारोह

39वाँ चक्रधर समारोह 2024

सुर–ताल, छंद और घुँघरू के 39 बरस...

'चक्रधर समारोह' महाराजा चक्रधर सिंह के सांगीतिक व्यक्तित्व का स्पंदित रूपांकन है। गायन–वादन और नृत्य के शीर्षस्थ कलाकारों सहित नयी पीढ़ी के प्रतिभाशाली कला–साधक इस समारोह मे अपनी प्रस्तुतियाँ देते रहे हैं।

पद्मश्री रामलाल जी, पद्मश्री हेमा मालिनी, पद्मश्री रंजना गौहर, पद्मश्री देवयानी, पद्मश्री भारती बंधु, पद्मश्री अनुज शर्मा, डॉ. कुमार विश्वास, पद्मश्री डॉ. सुरेन्द्र दुबे, श्रीमती मीनाक्षी शेषाद्रि, श्री राहुल शर्मा, श्री राकेश चौरसिया, श्री जीतू शंकर, मो. चाँद अफजल कादरी, श्री गजेन्द्र पण्डा 'त्रिधारा', डॉ. जी. रथीस बाबू, श्रीमती पौशाली चटर्जी, सुश्री विद्या प्रदीप, सुश्री मृदुस्मिता दास, सुश्री माया कुलश्रेष्ठ, डॉ. रघुपतरूनी श्रीकांत, श्री विनोद मिश्रा एवं अन्य ख्यातिलब्ध कलाकारों को इस वर्ष विशेष रूप से आमंत्रित किया गया है ।

चक्रधर समारोह में छत्तीसगढ़ी लोक संस्कृति को विशिष्ट महत्व प्रदान करते हुए करमा एवं गेड़ी लोक नृत्य, इंदिरा कला एवं संगीत विश्वविद्यालय, खैरागढ़ की सहभागिता सहित विविध लोक नृत्य एवं रायगढ़ जिले व प्रदेश की बहुसंख्य सांस्कृतिक प्रतिभाओं को मंच प्रदान किया गया है।

शास्त्रीयता, लोकरंग और महाराजा चक्रधर सिंह के प्रिय खेल 'कुश्ती एवं कबड्डी' के संयोजन के साथ, सुर–ताल–छंद और घुँघरू की यह परम्परा निरंतर जारी है ।

इस सांस्कृतिक उत्सव में आप समस्त कला प्रेमियों को मैं सहृदय आमंत्रित करता हूँ ।

कार्तिकेया गोयल, आई.ए.एस.
कलेक्टर, रायगढ़

चक्रधर समारोह

सुर–ताल, छंद और घुँघरू के 39 बरस...

39वाँ चक्रधर समारोह 2024

कार्यक्रम-विवरण

07 से 16 सितम्बर 2024
सायं 6.00 बजे से...
रामलीला मैदान, रायगढ़, छत्तीसगढ़

07.09.2024, शनिवार

उद्घाटन समारोह	: श्री गणेश पूजन, दीप प्रज्वलन, गणेश वंदना
सम्मान समारोह	: कथक–घुंघरू सम्मान : पद्मश्री रामलाल जी
कथक समूह नृत्य	: श्री भूपेन्द्र बरेठ एवं साथी कलाकारों द्वारा
करमा लोक नृत्य	: श्री मनियर भगत एवं साथी, जशपुर
भरतनाट्यम	पद्मश्री हेमा मालिनी, मुम्बई नृत्य नाटिका 'राधा रासबिहारी'

08.09.2024, रविवार

लोक गायन	: श्री विजय शर्मा, रायगढ़
शास्त्रीय गायन	: सुश्री वाणी राव, भोपाल
ओडिसी	: श्रीमती पूर्णाश्री राउत, रायपुर
कथक	: सुश्री दीपान्निता सरकार, दिल्ली
ओडिसी	: पद्मश्री रंजना गौहर, दिल्ली
शास्त्रीय गायन	: सुश्री ए. मंदाकिनी स्वैन, दिल्ली
सरोद वादन	: श्री सौगत गांगुली, कोलकाता

09.09.2024, सोमवार

कथक	: सुश्री जया दीवान, रायगढ़
शास्त्रीय गायन	: श्री रामप्रसाद सारथी, खरसिया
कथक	: सुश्री धरित्री सिंह चौहान, रायगढ़
कथक	: श्री शैंकी सिंह, दिल्ली
ओडिसी	: श्री गजेन्द्र पण्डा, सुश्री आर्या नन्दे 'त्रिधारा ग्रुप'
फ्यूज़न : तबला, संतूर, सितार	: श्री जीतू शंकर एवं ग्रुप, मुम्बई
कव्वाली	: मो. चाँद अफजल कादरी, दिल्ली

10.09.2024, मंगलवार

भजन गायन	: श्रीमती अनिता शर्मा, रायगढ़
कथक	: सुश्री नीत्या खत्री, रायगढ़
अकार्डियन वादन	: श्री तपसीर मोहम्मद एवं साथी, रायपुर
शास्त्रीय गायन	: श्री शिव प्रसाद राव, दिल्ली
बाँसुरी एवं तबला वादन	: श्री राकेश चौरसिया एवं साथी, मुम्बई
कथक (रायगढ़ घराना)	: श्रीमती बासंती वैष्णव एवं ज्योतिश्री बोहिदार
भजन एवं ग़ज़ल गायन	: श्री प्रभंजय चतुर्वेदी, रायपुर

11.09.2024, बुधवार

कथक	: सुश्री सौम्या नामदेव, रायगढ़
ओडिसी	: सुश्री विधि सेनगुप्ता, रायगढ़
कथक	: सुश्री दीपमाला सिंह, रायगढ़
सितार	: सुश्री अनुष्का सोनी, जबलपुर
कथक (समूह नृत्य)	: सुश्री उपासना भास्कर, धमतरी
भरतनाट्यम	: श्रीमती मीनाक्षी शेषाद्रि, मुम्बई
लोक एवं सूफी गायन	: श्री राकेश शर्मा, श्रीमती निशा शर्मा, रायगढ़

12.09.2024, गुरूवार

तबला वादन	: श्री अंशुल प्रताप सिंह, भोपाल
भरतनाट्यम	: सुश्री दीक्षा घोष, रायगढ़
कथक	: सुश्री अन्विता विश्वकर्मा, रायपुर
कथक (समूह नृत्य)	: डॉ. आरती सिंह, रायपुर
फ्यूज़न : संतूर, तबला वादन	: श्री राहुल शर्मा, श्री रामकुमार मिश्रा, मुम्बई
भरतनाट्यम, कुचिपुड़ी	: डॉ. जी. रथीस बाबू, भिलाई
विविध छत्तीसगढ़ी लोक नृत्य	: इंदिरा कला एवं संगीत विश्वविद्यालय, खैरागढ़

कुश्ती : दिनांक 11–12 सितम्बर 2024
कबड्डी: दिनांक 13,14,15 सितम्बर 2024
स्थल : रामलीला मैदान, रायगढ़, छत्तीसगढ़

13.09.2024, शुक्रवार

छत्तीसगढ़ी नृत्य–संगीत	: श्री हुतेन्द्र ईश्वर शर्मा, रायगढ़
कथक	: सुश्री शार्वी केशरवानी, सारंगढ़
भरतनाट्यम	: सुश्री भद्रा सिन्हा, सुश्री गायत्री शर्मा, दिल्ली
ओडिसी	: श्री लकी मोहंती, कटक
असमिया सत्रीया नृत्य	: सुश्री मृदुस्मिता दास, रायपुर
मोहिनीअट्टम	: सुश्री विद्या प्रदीप एवं साथी, कोच्चि
सूफ़ी एवं कबीर गायन	: पद्मश्री डॉ. भारती बंधु, रायपुर

14.09.2024, शनिवार

विविध कला नृत्य	: सुश्री अनंता पाण्डेय, रायगढ़
कथक	: सुश्री शाश्वती बनर्जी, रायगढ़
भरतनाट्यम	: सुश्री कृष्णभद्रा नम्बूदरी, मुम्बई
शास्त्रीय गायन (खयाल, ठुमरी)	: श्री विनोद मिश्रा, सतना
कुचिपुड़ी	: डॉ. रघुपतरुनी श्रीकांत, श्रीकाकुलम
मणिपुरी	: सुश्री पौशाली चटर्जी, कोलकाता
कथक	: श्री आलोक श्रीवास, दिल्ली

15.09.2024, रविवार

कथक	: सुश्री पलक देवांगन, रायगढ़
शास्त्रीय गायन (किराना घराना)	: पंडित प्रदीप कुमार चौबे, रायपुर
ओडिसी	: सुश्री भूमिसुता मिश्रा, रायपुर
कथक	: सुश्री वेदिका शरण, बिलासपुर
कथक	: सुश्री माया कुलश्रेष्ठ, दिल्ली
भरतनाट्यम	: पद्मश्री देवयानी, दिल्ली
छत्तीसगढ़ी लोक गायन	: पद्मश्री अनुज शर्मा, रायपुर

16.09.2024, सोमवार

बीहू लोकनृत्य	: सुश्री मानसी दत्ता एवं साथी, गुवाहाटी
गेड़ी लोक नृत्य	: श्री अनिल कुमार गढ़ेवाल एवं साथी, बिलासपुर
कवि सम्मेलन	: डॉ. कुमार विश्वास, पद्मश्री डॉ. सुरेन्द्र दुबे, श्री दिनेश बावरा, श्री सुदीप भोला एवं सुश्री साक्षी तिवारी

साँझी कलाकार बिरादरी का सांगीतिक नमन

शताब्दी दर शताब्दी बीतती जाती है तब जाकर किसी एक शताब्दी की कोख से पैदा होता है कोई कालजयी सांगीतिक व्यक्तित्व! संगीतमर्मज्ञ महाराजा चक्रधर सिंह ऐसे ही विशिष्ट सांगीतिक व्यक्तित्व के धनी और कलापारखी नरेश थे। चक्रधर समारोह, कलामर्मज्ञ महाराजा चक्रधर सिंह को पूरे देश की साँझी कलाकार बिरादरी का सांगीतिक और साहित्यिक नमन है। महाराजा चक्रधर सिंह के राजघराने की पीढ़ी में राजा भूपदेव सिंह के द्वितीय पुत्र गोंड़वंश के आदिवासी राजा चक्रधर सिंह का जन्म भाद्र पद संवत् 1862 को हुआ। आपके जन्म दिवस को राजकीय समारोह के रूप में मनाने के लिए "ऐतिहासिक गणेश मेला" का शुभारम्भ किया गया जो रायगढ़ के सांस्कृतिक गौरव के रूप में पूरे देश में प्रसिद्ध हुआ जिसमें देश के शीर्षस्थ प्रतिष्ठित कला, संगीत एवं साहित्य साधकों और क्रीड़ा जगत की प्रख्यात प्रतिभाओं को आमंत्रित कर सम्मानित किया जाता था। गणेश मेला के माध्यम से राष्ट्र की कला व संस्कृति को पर्याप्त संरक्षण प्राप्त हुआ है जिससे रायगढ़ ने छत्तीसगढ़ की सांस्कृतिक राजधानी व कला की तीर्थस्थली के रूप में पूरे राष्ट्र में प्रसिद्धि प्राप्त की। रायगढ़ दरबार, संगीत के उद्धारक पं. विष्णु दिगम्बर पलुस्कर, पं. ओंकार नाथ ठाकुर, पं. भूषण संगीताचार्य, बड़े रामदास, उस्ताद इनायत खाँ, कादर बख्श, मुनीर खाँ, कंठे महाराज, पं. बिंदादीन, सीताराम जी, हनुमान प्रसाद, सुखदेव महाराज, सुन्दर प्रसाद, जयलाल, लच्छू एवं अच्छन महाराज जैसे प्रख्यात साधकों की तपोभूमि रही है।

महाराजा चक्रधर सिंह ने देश के शीर्षस्थ नृत्याचार्यों से पं. कार्तिकराम, कल्याणदास महंत, बर्मनलाल एवं फिरतु महाराज को कथक की शिक्षा दिलाई जिन्होंने राष्ट्रीय ख्याति अर्जित की एवं मध्यप्रदेश शासन ने पं. कार्तिक राम, कल्याणदास, फिरतु महाराज एवं बर्मनलाल जी को शिखर सम्मान से सम्मानित किया। संगीत सम्राट राजा चक्रधर सिंह ने कथक की एक अभिनव शास्त्रीय शैली का विकास किया जो "रायगढ़ कथक घराना" के नाम से विख्यात है। राजा चक्रधर सिंह ने संगीत एवं साहित्य के कई अमूल्य ग्रंथों की रचना की है जिनमें नर्तन सर्वस्वम्, तालतोय निधि, राग रत्न मंजूषा और मुरज परण पुष्पाकर प्रसिद्ध हैं। इसी तरह अन्य कई प्रसिद्ध साहित्य कृतियां भी हैं। साहित्य संगीत की एक समृद्ध परम्परा है। साहित्य मर्मज्ञो में पं. सदाशिव दास, पं. भगवान पाण्डेय, जानकी वल्लभ शास्त्री, भगवती चरण वर्मा तथा रामकुमार वर्मा प्रमुख हैं। संगीत जगत की वर्तमान पीढ़ी में इस परम्परा का निर्वहन कर रहे हैं – संगीत शिरोमणि श्री वेदमणि सिंह ठाकुर, पं. रामलाल, निमाई चरण पण्डा, जगदीश मेहर, मनहरण सिंह ठाकुर एवं सुनील वैष्णव।

महाराजा चक्रधर सिंह के देहांत के बाद उनके पुत्र राजा ललित सिंह, कुमार सुरेन्द्र कुमार सिंह और कुमार भानुप्रताप सिंह द्वारा कई वर्षों से इस परम्परा का निर्वाह किया गया। 1984 में सर्वोदयी नेता केयूर भूषण की अध्यक्षता में राजपरिवार के सदस्यों, साहित्यकारों और संगीतकारों की एक सभा हुई। पं.मुकुटधर पाण्डेय, पं. किशोरी मोहन त्रिपाठी, लाला फूलचन्द्र श्रीवास्तव, जगदीश मेहर, डॉ. बलदेव, मनहर सिंह ठाकुर, वेदमणि सिंह ठाकुर, रजनीकांत मेहता, राजपरिवार के पूर्व सांसद सुरेन्द्र कुमार सिंह, कुमार भानुप्रताप सिंह, उर्वशी देवी एवं देवेन्द्र प्रताप सिंह (सदस्य) इसके संरक्षक हुए। बाद में इसमें यहाँ के पत्रकार, साहित्यकार, संगीतकारों एवं प्रबुद्ध नागरिकों की हिस्सेदारी बढ़ती गई।

सर्वप्रथम गणेशोत्सव, छत्तीसगढ़ के प्रसिद्ध संत कवि पवन दीवान द्वारा राजमहल परिसर में 18–09–1985 को उद्घाटित हुआ, जिसे दो चार वर्षों में ही राष्ट्रव्यापी ख्याति मिली। पं. मुकुटधर पाण्डेय ने इसे रायगढ़ के सांस्कृतिक जीवन में महत्वपूर्ण मानते हुए सार्वजनिक रूप से मनाया जाने वाला गणेशोत्सव निरूपित किया। महल का गणेशोत्सव राजकीय था। यह एक प्रकार से नये युग की शुरूआत थी। छत्तीसगढ़ शासन द्वारा चक्रधर समारोह सन् 2001 से शुरू किया गया जो अब तक उत्तरोत्तर आगे बढ़ रहा है। छत्तीसगढ़ शासन ने इस परम्परा को समृद्ध करते हुए दस दिवसीय समारोह को शासकीय मान्यता प्रदान कर सांस्कृतिक विरासत के संरक्षण एवं उन्नयन में महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वाह किया और रायगढ़ को पुनः कला व संगीत की तीर्थस्थली के रूप में गौरवान्वित किया है। संस्कृति विभाग– छत्तीसगढ़ शासन, जिला प्रशासन एवं जन सहयोग से रायगढ़ का ऐतिहासिक राष्ट्रीय सांस्कृतिक उत्सव गणेश मेला, "चक्रधर समारोह" का यह 39वाँ गौरवपूर्ण आयोजन है।

संगीत सम्राट
महाराजा चक्रधर सिंह

छत्तीसगढ़ शासन, संस्कृति विभाग, पर्यटन मंडल एवं जन सहयोग से जिला प्रशासन का प्रतिष्ठापूर्ण आयोजन